इकाई 17 मंदिर की वास्तुकला

संरचना

17.0 उद्देश्य

17.1 प्रस्तावना

17.2 मंदिर का अर्थ और अवधारणा

17.3 मंदिर के रूप, लक्षण और विशेषताएं

17.4 मंदिर का विकास और वृध्दि

17.5 नागरमंदिर

- 17.51 गुप्तमंदिर
- 17.5.2 राजपूतकाल के मंदिर
- 17.5.2.1 गुर्जरप्रतिहारों के मंदिर
- 17.5.2.2 कलकुरीमंदिर
- 17.5.2.3 चंदेलो के मंदिर
- 17.5.3 ओडिशा के मंदिर
- 17.5.4 गुजरात और राजस्थान के मंदिर

17.6 द्रविड़ मंदिर

- 17.6.1 पल्लवमंदिर
- 17.6.2 चोलमंदिर
- 17.6.3 चालुक्य मंदिर
- 17.6.4 विजय नगरमंदिर

17.7 वेसरमंदिर

- 17.7.1 होयसलकाल के मंदिर
- 17.7.2 दिलवाड़ाजैनमंदिर

17.8 सारांश

17.9 शब्दावली

17.10 अपनी प्रगति की जांचकरे

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

17.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद,आप सक्षमहोजाएंगेः

- मंदिर का अर्थ और उसके विकास को समझने के लिए,
- मंदिर निर्माण की विभिन्न शैलियों की पहचानकरनेके लिएं,
- मंदिरों के स्थापत्य विकास को महसूस करने और उसका मूल्यांकन करने के लिए,
- क्षेत्रवारमंदिरके रूपोंऔर शैलियों की व्याख्या के लिए।

17.1प्रस्तावना

ऐसा लगता है कि भारत में धार्मिक इमारतें सिंधु–सरस्वती या हड़प्पा सभ्यता (3200–2600 ईसा पूर्व) के शहरीचरण के दौरान विकसित हुईं और बाद में छठी शताब्दी ई.पू.तक जारी रहीं। देवताओं और मनुष्यों की कुछ मान्यताओं ने मंदिर को एक स्थापत्य निकाय के रूप में उभारा है। सिंधु घाटी के लोगों का भगवान या देवताओं के साथ संबंध पिछले कई दशकों के दौरान सिंधु सरस्वती सभ्यता के स्थलों पर किए गए पुरातात्विक उत्खनन में खोजे गए प्राचीन अवशेषों के अनुरूप माना जा सकता है।

17.2 मंदिर का अर्थ और अवधारणा

इनमें से एक व्याख्या यह भी है कि हरियाणा के बनवली में कोई धार्मिक भवन, गढ़ी या ईमारत हुआ करती थी। इस स्थल की खुदाई पुरातत्वविद् रवींद्रसिंहबिष्ट ने की थी, खुदाई के अवशेषों से अग्निवेदियों के साथमिट्टी की ईंटों से बनीलगभग 2500 ईसापूर्व की एक मेहरावदार (अपसाइडल)संरचना का पता चलताहै।हालांकि, यह कहनामुश्किलहैकिक्या यह दीवारों, छत, प्रवेश द्वारआदि के साथ एक बंद निर्माणऔरसंरचनाथी; इसे वैदिकअग्निवेदीप्रकार की एक खुलीसंरचनामानाजाताहै।

सल्बा–सूत्र जैसेग्रंथोंमेंअनुष्ठानों की वास्तुकला खुलीवायु यज्ञ प्लेटफार्मों या वेदियों के बारेमेंउल्लेख कियागयाहैजोकेवलअग्नि से संबंधितअनुष्ठानों के लिए उपयोगकिए जातेहैं न किनियमितमंदिरों के लिए।जबपरंपराओंऔरपूजा के प्रतीकों (पूजा की वस्तुओं) को एक साथजोडागया, जिसनेभगवान के घर की अवधारणाकोजन्मदियाऔरमंदिरनिर्माण की उत्पत्तिहुई। ऐसालगताहैकिमहाजनपदकाल की शुरुआतमेंयह घटनाभारतमेंकेवल 700 ईसापूर्व

के बादविकसितहुईथी।आयल, देवालय, प्रसाद, देवप्रसाद, बाड़ी, कालीबाड़ी, मंदिराआदि शब्दों का अर्थहै एकऔर एकही"घर"।मंदिर की वास्तुकलामेंदोस्थानों का विशेष रूप से ध्यान रखा जाताहै, एक भगवान के लिए औरदूसराभक्त के लिए।भगवान की छवि के लिए जगहकोगर्भ–गृहकहाजाताहै, यानी मां का गर्भ, जो एकमात्र ऐसास्थानहैजोवायुमंडलीय प्रदूषण से अछूतारहताहै, इसलिए सबसे शुद्ध औरपवित्रहोताहै।गर्भगृह के सामनेस्थितभक्तों के लिए जगहकोमंडपकहाजाताहै। इस अवधारणाकोचौथी–पांचवीं शताब्दीसीईमेंअपनायागयाथा।

17.3 मंदिर का रूप और विशेषताएं

भारतमेंमंदिरोंको उनके क्षेत्रों, रूपोंऔरविशेषताओं के आधारपरपहचानाजासकताहै।उत्तरभारतीय या नागर शैली के मंदिर की वास्तुकलामें घुमावदारमीनार की सबसेमहत्वपूर्णविशेषताहैक्योंकिइसकीअधिरचनाजिसेशिखर के रूपमेंभीजानाजाताहै, इसके शीर्षपर एक नुकीलेसिरे के साथचार–तरफा, चौकोर या आयताकारहै।मंदिर की एक और शैलीकोविभिन्न रूपोंऔरविशेषताओं के साथदक्षिणमें देखाजाताहैऔर इसे द्रविड़ शैली के रूपमेंजानाजाताहै। यहाँ पर छह या आठभुजाओं का सीढ़ीनुमाविमानहोताहैजिसके शीर्षपर एक गोलस्तूप (अच्छी तरह से निर्मितशिलाखंड)होताहै।मंदिरों की वेसर शैलीनागरऔरद्रविड़ दोनों का संयोजनहोताहै, इसकीअधिरचना घंटी के आकार की रहतीहै।

17.4 मंदिर का विकास और वृध्दि

मंदिरों की वास्तुकला घरों के प्रकारोंजैसेझोपड़ियों (नवपाषाण काल) औरविभिन्नजमीनी योजनाओंजैसेगोल, चौकोर, आयताकार, अपसाइडलऔरअंडाकार से विकसितहुईहै।कोईभीमंदिरनिर्माणप्रमुख रूप से इस श्रेणी मेंआऐगा।इसमेंतारे के आकार का और एक अनुप्रस्थभाग (ट्रांसेप्ट)जैसेअतिरिक्तनिर्माणभीहोसकताहै।विदिशामें 500 ईसापूर्व के मेहरावदार (अपसाइडल) या अंडाकारआकार के मंदिर के अवशेषों का पता एम.डी. खरे ने लगायाथा।ये निर्माण 700 और 500 ईसापूर्व के बीच की अवधि के एक गाँवमेंआमलोगों की फूस की झोपड़ियाँ जैसेथे, ऐसालगताहैकिमंदिरनिर्माताओं ने मंदिर का सबसेपहलामॉडलप्रदानकियाथा।

वास्तुकारों यास्थापतिओं ने समृद्ध अभिजातवर्ग के आगमन के साथमंदिरों की वास्तुकला का विकासकिया, जिन्होंनेविस्तृतनक्काशीऔरसजावटीसंरचनाओं, प्रवेश द्वारऔरप्रवेश द्वार के साथबहुमंजिला, ऊंची छत वालीइमारतों के निर्माण के लिए वित्त का प्रबंधकिया। यह शुंग–कुसान के शासनकालमेंहुआ, यानी 200 ईसापूर्व से सीई 200 तकरहा। शासकोंऔरव्यापारिकवर्गों से संबंधितविदेशियों का प्रभावमथुरा से उत्खनितसजावटीतत्वों के साथवास्तुशिल्पअवशेषोंमें देखा जासकताहै।

17.5 नागरमंदिर

जैसाकिकहागयाहै, नागर शैली के मंदिर घुमावदारशिखरवालेउत्तरभारतीय मंदिरहोतेहैं।वेप्रमुख रूप से गुप्त, चंदेलों, ओडिशा के मंदिरों, राजस्थानऔरगुजरात के मंदिरोंऔरराजपूतकाल के मंदिरों द्वारानिर्मितमंदिरों के रूपमेंपहचानेजातेहैं।

17.5.2 गुप्तमंदिर

गुप्तसाम्राज्य औरगुप्तसंस्कृति की स्थापनाश्रीगुप्त ने 320 ई.पू.में की थी। उनके उत्तराधिकारी ने उनकीविचारधाराओं का पालनकियाऔर इसे बहुत बढ़ाया।गुप्तों के शासनकाल के बारेमें एक आश्चर्यजनकतथ्य यह हैकिसभीधर्मों के मंदिर एक साथफले–फूलेऔरउनमेंकोईटकरावनहींहुआ।गुप्तकला की अवधिको"भारतीय शास्त्रीय कला" की अवधि के रूपमेंजानाजाताहै।इनमंदिरोंमेंस्थापत्य कला के साथकला का सम्मिश्रणपूरक रूपमें देखा जासकताहै।इसनेभारतमेंमंदिरवास्तुकला के नए सौंदर्यशास्त्र औरविकास के निर्माणमेंसबसेमहत्वपूर्णचरण का नेतृत्वकिया।इसकेबादमंदिरों की कलाऔरस्थापत्य कलामेंविकासहुआजो क्षेत्र की जलवायुपरिस्थितियों के अनुकूलथा। इस शासन ने स्थापत्य या वास्तुकारों का निर्माणकियाजोवास्तुकला के साथप्रयोगकरनेऔरचमत्कारपैदाकरनेमें रुचि रखतेथे।

गुप्तमंदिरों का निर्माणसूखीपत्थर की चिनाईकोमनचाहेआकारऔर रूपमेंप्रयोगकरकेकियागयाथा।इननिर्माणोंमेंमोर्टार का कोईउपयोगनहींथा।पत्थरोंकोजोड़नेमेंटेननऔरग्रूवविधि की तकनीक का प्रयोगकियाजाताथा।जिसछेदमेंइसेबनायागयाथाउसमेंपत्थर के टेनन का एक ब्लॉकडालागयाथा।पत्थरोंमेंप्रसिद्ध गुप्तमंदिरों के कुछउदाहरणमंदिरनं. 17 सांचीमें,

कंकलीदेवीतिवागामें, पार्वतीमंदिरनकाना–कथुरामें, शिवमंदिरभुमरामें, दशावतारमंदिरदेवगढ़ मेंऔरईंटमंदिरभितरगांवमें देखनेकोमिलतेहैं। इस अवधिमेंमंदिरों के लिए एक बुनियादी योजनासामनेआईजोभारतमेंमंदिरों के लिए मानक बन गई। इस योजनामें एक साधारणवर्गाकारतहखानाथाजिसकेसामनेसपाट छत थीजिसकेसामने कम खंभोंवालाबरामदा या मंडपथा। यहांगर्भगृहभगवान के लिए थाऔरभक्तों के लिए विस्तारितओसारा, बरामदा या द्वारमण्डप (पोर्च)हुआकरताथा।मंदिर की ये दोसंरचनाएं या इकाइयाँ एक हीधुरीमेंहोनेवालीहुआकरतीथींक्योंकिभक्तकोठीकसामने खड़ेदेवता के दर्शनहोनेचाहिए।परिक्रमापथ या प्रदक्षिणा–पथभक्तों के लिए गर्भ–गृह का एक चक्करलगाने के लिए बादमेंजोड़ागयाथा। समय बीतने के साथ, मंदिर की कलाऔरवास्तुकलामें नए नवाचारोंकोअपनायागया।शिखरको एक घर की छत परजैसेसंरचना, सजावटी रूपांकनोंजैसेउड़तेहुए स्वर्गदूत, भूत या बौने, जोड़े, गंगाऔर यमुनानदी की देवी की छवियों, द्वारपाल (द्वार–रक्षक), अर्ध–देवताओं, शेर के सिर, पुष्पस्क्रॉलआदिपरउठायागयाथा।शिखर, लिंटल्स, दरवाजे–जाम्ब, खंभे, मंडप, गर्भगृह की छत औरमंदिर की दीवारोंपरदिखाईदिएहैं।मंदिरोंमेंसहीप्रकार का धार्मिकमाहौलबनायागयाजिसनेभक्तोंकोअधिकआकर्षितकियागयाहै।गर्भगृहऔरमंडप के बीच एक वेस्टिबुल या अंतराललगाकरमंदिरमेंभक्तों की बढ़ी हुईभीड़ कोनियंत्रित कियागया।बड़ी संख्या मेंभक्तोंकोसमायोजितकरने के लिए मंडपको एक बड़े क्षेत्र मेंपरिवर्तितकरदियागयाथाऔरतब इसे महामंडपकहाजाताथा।मंदिर की वास्तुकलामेंअन्य जोड़ अर्ध–मंडपऔरमुख–मंडप का समावेशथे।सीधेमहामंडपमेंप्रवेशकरनाअच्छानहींमानाजाताथा, इसलिए इसमेंअर्ध–मंडपजोड़ागयाथाजोकिमहामंडप से छोटाथा, जिसमें एक छोटासाबरामदाथाजिसेमुख–मंडप के नाम से जानाजाताथा।

गुप्तकालमेंमंदिरों के निर्माणमेंभीपकीहुईईंटों का उपयोगकियाजाताथा।सबसेप्रसिद्ध उत्तरप्रदेश के भितरगांवमेंस्थितहै। इस मंदिर की अनूठीविशेषताकिनारे से किनारेतकईंटों से बनागोलमेहराबभीमौजूदहै।

गुप्तकालमेंस्तंभोंमेंपूंजी का एक नया रूपथाजिसे"फूलदानपूंजी" या "पूर्ण–कलसा" के रूपमेंजानाजाताथा, जिसनेउल्टेकमल या बेलकैपिटल की मौर्यपरंपराकोबदलदिया।गुप्तस्तंभोंपरसजावटीविशेषता के रूपमेंफूलदानमेंपत्ते के पैटर्नथे। इस

तरह के स्तंभ खोह के गुप्तमंदिरोंमेंबनाए गए थे।सांचीमेंमंदिर १७ गुप्तमंदिरों की परंपराकोदर्शाताहैजोकिअशलर या कपड़ेपहनेपत्थर की चिनाई से निर्मितहैं। यहांस्तंभआधारपरवर्गाकारहैं, इसकेबादअष्टकोणीय औरफिरसोलह–पक्षीय खंडहैंऔर एक उल्टेकमलमेंसमाप्तहोतेहैं।जबकिकनकलीदेवीमेंफूलदानपूंजी का प्रारंभिक रूप देखा जासकताहै, जिसनेपत्थर के एक विशाल खंड (अबेकस) का समर्थनकिया, जिसमें शेर की पंखुड़ियाँ थीं।मौर्यों की तरह, गुप्तों ने मुक्त खड़ेस्तंभों की परंपराकोजारी रखा औरइन्हेंफूलदान की राजधानी द्वाराप्रतिस्थापितनहींकियागयाथा, जैसाकिउत्तरप्रदेश के भितरीमेंराजाकुमारगुप्त द्वाराबनवायागयाथा।

17.5.2 राजपूतकाल के मंदिर

गुप्तों के बाद, उत्तर, मध्य औरउत्तरपश्चिमीभारतमेंछोटेराज्यों का उदय हुआ। ये राजवंशसातवींऔरग्यारहवीं शताब्दी के बीचफले–फूलेऔरअपने क्षेत्र मेंमंदिरों के निर्माणकोप्रायोजितकिया।

17.5.2.1 गुर्जर–प्रतिहारों के मंदिर (8वीं –11वीं शताब्दी)

प्रतिहारों के प्रारंभिक शासनकालमेंबनेमंदिरमध्य भारतीय मंदिरवास्तुकलामेंविकास के विभिन्नचरणोंकोदर्शातेहैं।तेली का मंदिरमध्य प्रदेश के ग्वालियरमें शक्तिपंथकोसमर्पितहैऔर यह सबसेपुरानेप्रतिहारमंदिरोंमें से एक है। इस मंदिर की वास्तुकला से आयताकारमूल–प्रसाद (मूल या मूल) का पता चलताहै, मुख्य मंदिरजहांदेवताकोप्रतिष्ठितकियाजाताहैऔर एक आयताकारशिखरजोद्रविड़ शैली के समानहै। इस प्रारंभिकमंदिर की एक अनूठीविशेषतापोर्च के ऊपरबनी एक सीढ़ीदारपिरामिडनुमा छत "फामसा"है।मंदिर के बाहरीहिस्सेकोकुडू (खिड़की के मेहराब), कमल के पदकऔरलैटिनाशिखर के एक बहुतहीमूल रूप से सजायागयाहै, यानीशिखरचीनी की रोटीजैसादिखताहै।बाद की अवधिमेंप्रतिहारों ने मूल–प्रसादऔरइसकीसुपरसंरचनाकोऔरविकसितकिया।अच्छेवेंटिलेशन के लिए खुलीवेदिका (रेलिंग) के साथऊपरलटकेहुए बाज, मंडप या हॉल की व्यवस्था की गईथी।मध्य प्रदेश के बरोलीमें१०वीं शताब्दी के घटेश्वरमंदिरमेंभीद्रविड़ विशेषताओंको देखा जासकताहै।इसनेपैरापेटपरद्रविड़ सजावट के साथअपनेवर्गाकारबरामदे के ऊपरपिरामिडनुमा

छत बनाईहै।बरोली के मंदिरोंमेंसामान्य प्रतिहारमंदिरों की तुलनामेंलम्बेशिखरहैं। इस काल के मंदिरमेंराह–पग या केंद्रीय बैंडहैंजिन्हेंजाली या स्क्रीन के रूपमेंजानाजाताहै, जोस्टैंसिलतकनीकोंमेंडिज़ाइनकिए गए हैं, जोमानवजीभ के रूपमें त्रिकोणीय औरनुकीलेहैं। यह गंदी (गर्दन) से थोड़ाआगेहैऔरबड़ेआमलका के आधारतकपहुंचताहै। यह मध्य भारतीय शिखर की विशेषताहै।पूर्ण–कलशशिखर का ताजपहनाताहै।बाद की अवधिमेंशिखरकोदोआमलकों से सजायागयाथाजहांछोटेआमलकाकोबड़े के ऊपर रखा गयाथा।ग्यारसपुर के मंदिरकलाऔरवास्तुकलामेंबरोली के मंदिरों से अधिकविकसितहैं। यहां के मंदिरमध्य भारतीय मंदिरवास्तुकला शेखरी शैली का सबसेपहलाज्ञातउदाहरणप्रदानकरतेहैं।मूल–प्रसाद के आधारपरमुख्य शिखर के आधारपरसमूहितलघु"लैटिना"शिखरहैं।

17.5.2.2 कलकुरीमंदिर

दसवीं शताब्दी के आसपासमध्य भारतमें एक औरराजवंश"कलकुरी"महान शक्तिमेंथाऔरभारतमेंमंदिरवास्तुकला का एक संक्रमणकालीनचरण देखा गयाथा।उदाहरण के लिए, अमरकंटकऔरसोहागपुर के मंदिर।अमरकंटकमें केशवनारायण मंदिर की मंदिर योजना, जहांग्रहण–गृह, अंतलाऔरमंडप, सभी एक हीलाइनमेंगठबंधनकररहेहैं, मंडपअंताल की ओरजाताहैजोबदलेमेंग्रहण–गृह के लिए खुलताहै, सभी एक हीलाइनमेंगठबंधनकररहेहैंपंच–रथ या पंच–प्रक्षेपण योजनाकोशिखरमेंइसकेअधिरचना–गृह के साथडबलअमलाकों के साथअधिरचनामें देखा जाताहै। यहाँ के मंडपमेंपत्थर के आसनहैंजिनकोपीछे की ओरसजायागयाहै, जिन्हेंकासासनकहाजाताहै।मूल–मंडप या मुख्य मंडप के सामनेअर्ध–मंडप का विकाससोहागपुर के विराटेश्वरमंदिरमें देखा जासकताहै। यह मंदिर एक सामान्य मंचपरबनायागयाहैजिसेअधिष्ठान के नाम से जानाजाताहै, जिसमेंशिखरसप्तरथ योजनाहै, जिसमेंसातअनुमानहैंऔरतीनअमलाकों के साथताजपहनायागयाहै।

17.5.2.3 चंदेलो के मंदिर

चंदेल कभीगुजरा–प्रतिहारों के सामंतथे, लेकिनदसवीं शताब्दीतक स्वतंत्र होगए। उनके शासनकालमेंसाहित्य, कलाऔरवास्तुकला का विकासहुआ। खजुराहोउनकीराजधानीथी,

जहांभव्य मंदिरथे, जिनमेंवास्तुकारोंऔरकलाकारों की महान कृ तियोंकोप्रदर्शितकियागयाथा।इनचमत्कारों का निर्माणउच्चगुणवत्तावालेबलुआपत्थर से कियागयाथा, जोबफ से लेकरगुलाबी या हल्केपीलेऔरग्रेनाइटतकथे। उनके मंदिर के कुछतत्वप्रतिहारमंदिरों के तत्वों के समानथे, यानी एक अर्ध–मंडप के रूपमें एक चरणबद्ध पिरामिडअधिरचनाऔरउथलापोर्टिको या फिर एक सादेमंचपरउठाए गए शंख–मंडप।चौसठ–योगिनी (चौसठ योगिनी) पूरीतरह से ग्रेनाइट से बनीथी। यह चौंसठदेवी कोसमर्पितहैजोउच्चजगतीपरउठीहैंऔरउत्तर–पूर्व–दक्षिण–पश्चिमदिशामेंउन्मुख हैं।मंदिरमें एक केंद्रीय प्रांगणहैजोचौंतीसछोटेमंदिरों से घिराहुआ है (मूल रूप से यह चौंसठमंदिरों से घिराथा) जो अखंडदरवाजेऔरलिंटल्स के साथकपड़ेपहनेपत्थरों से बनाथा।वेनागरशिखर के भ्रूण रूपों से आगेबढ़ायेगयेहैं।

बादमेंकलाकारों ने मंदिर की वास्तुकलामेंऔरअधिककलाविकसित की, मुख्य शिखर के चारोंओरउर्षाश्रृंग या सहायकशिखरबनाए गए। खजुराहोमेंमंदिरदोप्रकार के बताए गए हैं, एक निरंधराप्रकार के मंदिरऔरदूसरासंधारप्रकार के मंदिर।निरंधराप्रकार के मंदिरोंमेंपरदक्षिणापथ या परिक्रमापथनहींहोगाजबकिसंधाराप्रकार के मंदिरोंमेंगर्भगृह के चारोंओरकोईपरिक्रमापथनहींहै। खजुराहो के मंदिरों की सबसेमहत्वपूर्णविशेषताढलवांसूरज की छाया या छज्जोंवालीबालकनीवाली खिड़कियांहैंऔर यह संधाराप्रकार के मंदिरोंमेंप्रसिद्ध है। ऐसेमंदिरों की योजनाको"लैटिनक्रॉस"कहाजाताहैक्योंकिगर्भगृहोंको उनके तीनतरफबाहरी प्रक्षेपितबालकनियों के साथप्रदानकियागयाथा, यह एक क्रॉस का आकारदेताहैजिसमेंतीनऊपरीभुजाएँ– शीर्षऔरभुजाएँ समानलंबाई की होतीहैं, केवलनिचलाहाथबाकी की तुलनामें लंबा है।विशिष्टनागर शैलीऔर खजुराहोमेंसबसेबड़ेमंदिरकंदरिया–महादेव, लक्ष्मणऔरविश्वनाथमंदिरहैं।इनमंदिरोंमें एक हीमंचपरचारकोनोंपर एक मुख्य मंदिरऔरचारसहायकछोटेमंदिरहैंऔरउन्हेंपंचायतनमंदिरकहाजाताहै।प्रत्येकडिब्बे या मंडप का अपनाशिखरहोताहै।इनमंदिरोंकोपर्याप्तहवाऔरप्रकाशप्रदानकरने के लिए अर्ध–मंडपमेंछज्जा के साथबालकनियों या तीनतरफ से खोलकरबनायागयाथा।इनमंदिरों का प्रवेश एक विस्तृतनक्काशीदारमकर–तोरण के माध्यम से होताहै, फिरपहलेहॉलकोअर्ध–मंडप के रूपमेंजानाजाताहैजोइसकेकिनारोंपरकासासनप्रदानकरताहैऔर यह मंडपतीनतरफभी

खुलाहोताहैऔरइसकेस्तंभ छत औरऊपरलटकतेछज्जों का समर्थनकरतेहैं।अर्ध–मंडपबड़ेमंडपमें खुलताहैजिसमेंअच्छेवेंटिलेशनऔरकासासन के लिए उद्घाटनहोताहै।फिरउद्घाटनमहामंडपमेंहोताहै, एक संलग्नहॉलजिसकेदोनोंओरबालकनियाँ होतीहैं।महामंडप के केंद्रमेंचारस्तंभहैंजोबीम या वास्तुकलाऔर छत का समर्थनकरतेहैं।इनमंदिरों का ग्रहण–गृह"लैटिनक्रॉस"नामक योजना के साथसंधाराप्रकार का है।

खजुराहोमंदिरों के आंतरिकभागकोसुंदरमूर्तियों के साथबड़ेपैमानेपरउकेरागयाहै।इंटीरियर एक आभासीआर्टगैलरीप्रतीतहोताहैजहांकोईभीप्राचीनभारतीय कला के शिखरको देख सकताहैऔरदेवी–देवताओं, ज्यामितीय औरपुष्पपैटर्न की प्रतिमाओंको देखने का आनंदलेसकताहै।

17.5.3 ओडिशा के मंदिर

ओडिशा के मंदिरनागर शैली की वास्तुकला के बेहतरीनउदाहरणहैं।वेसातवींऔरतेरहवीं शताब्दीसीई के बीच समृद्ध हुए।वेप्रमुख रूप से पुरीऔरभुवनेश्वरमेंस्थितहैं।इनमंदिरोंमेंसबसेप्रमुख कोणार्क का सूर्यमंदिरहैजोसबसेभव्य हैऔरतेरहवीं शताब्दी के मध्य मेंबनायागयाथा।इनमंदिरोंकोस्थानीय वास्तुकारों या स्थापति द्वारादेउल

(संस्कृत शब्ददेवालय से निकला शब्द) कहाजाताथा।देउल या मंदिरतीनप्रकार के होतेहैं:

1. रेखा–देउल–इसकाशिखर या शिखररैखिक या सीधाहोताहै। यहाँ रेखा का अर्थहैसीधाऔरदेउल का अर्थहैमंदिर।

2. पिधा–देउल–इसकेशिखरमें घटतेहुए पिढ़ों या चबूतरे के स्तरहोतेहैं। यहाँ पीठ का अर्थहैबैठने के लिए एक नीचीचपटीलकड़ी की तख्ती। इसे जगमोहनभीकहाजाताहै, जोवास्तवमेंगर्भगृह के सामनेबना एक मंडपहै।

3. खाखरा–देउल–शिखर का शीर्षलौकी या बैरल के आकार की छत जैसादिखताहै। यहाँ खाखरा शब्द खाखरू यानीकद्दूऔरलौकी से लियागयाहै।

वास्तुकारों ने मंदिर के विभिन्नहिस्सों के लिए मानव शरीर से प्राप्त शब्दों का इस्तेमालकिया।ओडिशा के मंदिरों के निम्नलिखितप्रमुख भागहैं:–

1. पभग या पग –पैर का भाग। यह शब्दबेसलप्लेटफॉर्म या निम्नअधिष्ठानपरलागूहोताहैजिसपरमंदिर खड़ाहोताहै।

2. जंघा–जांघ। इस शब्दकोमंदिर के ऊर्ध्वाधरभाग के लिए कहाजाताहैजिसमेंगर्भगृह, अंतरालऔरमहामंडपहोतेहैं।

3. गंदी–सूंड।यह शब्दशिखर के लिए है।

4. मस्तक–माथा। यहशिखरपरमंदिर के शीर्षसामने के भागकोइंगितकरताहै।

5. खपुरी– खोपड़ी–शीर्ष यासिर। यह शिखर के ऊपर रखेगोलपत्थर के लिए लगायाजाताहैजो खोपड़ी के ऊपरजैसादिखताहै।

6. सिरसा–सिर का सबसेऊपरीभागहोताहै। यहकलश या स्तूपिका द्वाराप्रतिनिधित्वकरताहै।

ओडिशा के मंदिरोंमेंदो या दो से अधिकहॉलहैंजिनकाउपयोगविभिन्नउद्देश्यों के लिए कियाजाताहैऔरप्रत्येक का अलग–अलगनिर्माणकियाजाताहै, अर्थात् "नाट्यमंडप"नृत्य का हॉलऔर"भोग–मंडप"प्रसाद का हॉल। यह ध्यानदियाजासकताहैकिरेखा–देउल, पिधा–देउल, नाट्य–मंडपऔरभोग–मंडप एक अक्षीय संरेखणमें रखे गए हैंऔरगर्भ–गृह का सामनाकररहेहैं।मंदिरोंमेंतोरण द्वारहै, जोमंदिर के सामने एक स्वतंत्र रूप से खड़ाधनुषाकारप्रवेश द्वारहै।सबसेपुरानाओडिशामंदिरभुवनेश्वरमेंहै, परशुरामेश्वरमंदिरउनमें से एक हैऔरइसमें त्रिरथप्रकाररेखा–देउलहै, यानीचारतरफ से प्रत्येकपर एक प्रक्षेपण के साथ।स्थापत्य पूर्णतावालेमंदिरको"ओडिशावास्तुकला के रत्न" के रूपमेंभीजानाजाताहै, भुवनेश्वरमेंमुक्तेश्वरमंदिरहै। इसे 10वीं शताब्दी की शुरुआतमेंओडिशा के मंदिरोंमेंविकास का दूसराचरणमानाजाताहै।मंदिर ने रेखा–देउल की गंदी या शिखरऔरपीठा–देउल की जगमोहनकोपूरीतरह से विकसितकियाहै।बादमेंमंदिर की वास्तुकलाऔरअधिकजटिलहोगई, त्रिरथप्रकाररेखा–देउल का विस्तारपंचरथ, सप्तरथऔर अंत मेंनवरथप्रकारतकहोगया।

ओडिशा शैली के मंदिर की सबसेबड़ीउपलब्धिकोपुरीजिले के कोणार्क का सूर्यमंदिरकहाजाताहै, जिसे 13वीं शताब्दीमेंबंगाल की खाड़ी के

समुद्रतटपरगंगाराजानरसिंहदेवप्रथम द्वाराबनवायागयाथा।मंदिरगहरेरंग का प्रतीतहोताहैऔरप्रारंभिक यूरोपीय लेखकों द्वारा इसे "ब्लैकपैगोडा" नाम दियागयाथा।मंदिरमूल रूप से खोंडालाइटपत्थर से बनाहैजोस्थानीय रूप से उपलब्धथा।मंदिर की कल्पनासूर्यदेवतासूर्य के रथ के रूपमें की गईहै।पंचरथ योजना की रेखा–देउलऔरपीठा–देउल के साथइसकासंरेखणपूर्व–पश्चिमहै।कभीमंदिरमेंबिजलीगिरीथी, तब से रेखा–देउल जीर्ण–शीर्णहै। एक विशालअमलकापिधा–देउल की पिरामिडनुमा छत का ताजपहनाताहै।मंदिर के अंदरसूर्य के चारचित्र थे, इनमें से एक राष्ट्रीय संग्रहालय, नईदिल्लीमेंहै।मंदिरमें १२ जोड़ीपहिए हैं, जिनमें से प्रत्येक का व्यासलगभग१०फीटहै, जिसमेंतीलियों का एक सेटऔरविस्तृतनक्काशीहै।सात घोड़ोंकोचलने की मुद्रामेंदिखायागयाहै।मंदिरसूर्य की सातकिरणों का प्रतिनिधित्वकरताहैऔरइसकेप्रवेश द्वारपरदो शेरहाथियोंकोकुचलतेहुए पहरादेतेहैंऔरप्रत्येकहाथी एक मानव शरीर के शीर्षपरस्थितहोताहै।मंदिरदेवताओं, खगोलीय औरमानवसंगीतकारों, नर्तकियों, प्रेमियोंऔरदरबारी जीवन के दृश्यों की हजारोंसतहछवियों से सुशोभितहै, जिसमेंशिकारऔरलड़ाई से लेकरसांसारिक जीवन के सुख शामिलहैं।

17.5.4 गुजरातऔरराजस्थान के मंदिर

गुजरात के मंदिरनागर शैली की श्रेणी मेंआतेहैं।गुजरातमेंगुप्तकाल के बाद, वल्लभी के मैत्रकों के राज्य ने संरचनात्मकमंदिरगतिविधियों के नए तत्वों के साथ शुरुआत की जिसे"सौराष्ट्र शैली" के रूपमेंजानाजानेलगा।इसकेचारप्रकार के अधिरचनाहैं, अर्थात्, (1) द्रविड़ शिखरजैसाकुटीना, (2) वल्लभी (वैगन–वॉल्ट/साला–शिखर), (3) फामसन (पच्चर के आकार का, चरणबद्ध पिरामिड), और (4) लैटिना (घुमावदार प्रोफ़ाइल के साथ एकलशिखर किस्म)। फामसनशिखरकोद्रविड़ प्रकार के डोमिकलफिनियल द्वाराताजपहनायाजाताहै, न किअमलाक, आदि।मंदिरोंमेंमुख–मंडप के साथ या बिनावर्गाकारगर्भ–गृह शामिलथे।संधारऔरनिरंधरादोनोंमंदिरथे।मंदिर की दीवाररथ के अनुमानदिखातीहैऔरगुप्तपरंपरा का पालनकरतेहुए पूरामंदिर एक जगती या मंचपर खड़ाहै।छठीऔरसातवीं शताब्दी के कुछमैत्रक मंदिरगोपमेंहैं; कडवारमेंविष्णुमंदिर, बिलेश्वरमेंबिल्वनाथमंदिरऔरपासनावाड़ा, श्रीनगरऔरझामरामेंसूर्यमंदिर।

सौराष्ट्र शैली से नागर शैलीमेंपरिवर्तन8वीं शताब्दी की शुरुआतमेंगुजरात के मंदिरवास्तुकलामेंहोताहै। इस काल के मंदिरोंमें त्रिरथ रूपमें एक प्रारंभिकशिखर, एक प्रदक्षिणा–पाठ के साथ एक गर्भगृहऔर एक बरामदेऔरढलानवाली छत के साथ एक बंद मंडपप्रदर्शितहोताहै।सोलंकी के तहतमंदिर की वास्तुकला शैलीमारू–गुर्जर (पुरानी क्षेत्रीय परंपराओं का मिश्रण) थी।इसमेंगर्भ–गृह, गुढ़ा–मंडप या महा–मंडपऔरअंतला (गुड़ा–मंडप के सामने एक बरामदा) शामिलहैं।इनमंदिरों का रंग–मंडपआधीदीवारोंवालाऔर खुलाहैजोहवाऔरप्रकाश के मुक्तमार्ग की अनुमतिदेताहै।शिखरसभीनागरमंदिरोंमेंहमेशा की तरहहै, कंगनी के ऊपर से शुरू होताहैऔरउरहृंग से सुशोभितहोताहै। घुमावदारशिखर एक विशालअमलक के साथसबसेऊपरहै, जिसकेऊपरकैंड्रिका (कैपस्टोन) औरकलसो(पॉट फिनियल) टिकीहुईहै।

गुजरात की मंदिर शैलीअपनेसजाए गए प्रवेश द्वारकीर्ति–तोरानाऔर एक मंदिरटैंक के कारणअद्वितीय है।मंडोवारागुजरात के मंदिरों की सजी हुईदीवार के लिए इस्तेमालकियाजानेवाला शब्दहै। यह मंदिर के हॉल का सबसेमहत्वपूर्णतत्वऔरमुख्य भागहै। इसे सुंदरराहतमूर्तियों से सजानेपरविशेषध्यानदियागया।मोढेरा का सूर्यमंदिरसोलंकीकाल के शानदारमंदिरोंमें से एक है।मंदिरआंशिक रूप से क्षतिग्रस्तहोगयाहै। यह पूर्व–मुखीहै, जोसुनहरे–भूरेरंग के बलुआपत्थर से बनाहै, एक विस्तृत छत पर खड़ाहै, जिसे खरा–सिला के नाम से जानाजाताहै, जोपत्थर से सामना की गईठोसईंट से बनाहै।मंदिरपरिसर के सामने एक सीढ़ीदारकुआँ या एक कुंडहै।मंदिरमेंकीर्ति–तोरणहैऔरइसमेंसभा–मंडप, गुढ़ा–मंडपऔरगर्भ–गृह शामिलहैं, सभी एक हीधुरीमेंसंरेखितहैं।तेरहवीं शताब्दी के अंत मेंदिल्ली के मुस्लिम शासकों ने गुजरातपरआक्रमणकियाऔरसोलंकीराजवंश के साथ–साथउनकी शानदारस्थापत्य गतिविधियोंकोसमाप्त कर दिया।

मंडोर के गुर्जर–प्रतिहारों ने 8वीं–10वीं शताब्दी के दौरानराजस्थान के मंदिरवास्तुकलाकोमहत्वदियाहै।ओसियां, जगतऔरकिराडूमेंअनेकमंदिरों का निर्माणकियागया। ये नागर शैली के मंदिरपंचायतथे, जिसमेंमूल–प्रसाद या केंद्रमेंमुख्य मंदिरहोताहैजोचारकोनोंपरचारछोटेमंदिरों से घिराहोताहै। एक खुलामंडपहैजोबड़ेपैमानेपरनक्काशीदारहैऔरआमतौरपरगर्भ–गृह के सामने खड़ाहोताहै, जोबदलेमेंमुख–मंडप के सामनेहोताहै।इनमें से कुछप्रारंभिकमंदिरोंमेंप्रदक्षिणापथऔरअंतला

(वेस्टिब्यूल) हैं।राजस्थानमें 10वीं शताब्दी के बाद से गुजरात की सोलंकीस्थापत्य शैली का भीप्रभावहै।राजस्थान के कुछप्रसिद्ध मंदिरोंमेंनागदामेंजैनमंदिर, ओसियांमेंहरि–हर 1, ओसियांमेंपिपलामातामंदिर, जगतमेंअंबिकामातामंदिर, किराडूमेंसोमेश्वरमंदिरऔरमाउंटआबूमेंविमलावसाहीहैं।विमलावसाही के बारेमें एक दिलचस्पतथ्य यह हैकिइसमें एक झूठागुंबदहै। यह एक अष्टकोणीय मंडप की ओरजाताहै, जिसकेस्तंभसोलह खगोलीय अप्सराओं से सजाए गए एक भव्य गुंबददारगुंबद का समर्थनकरतेहैं।

अपनी प्रगति की जांच करे 1

1. मंदिरों से आपक्या समझतेहैं ?

2. नागर शैली के मंदिरों की विशेषताओं का वर्णनकीजिए।

3. खजुराहो के मंदिरों का संक्षिप्तविवरणदें।

17.6 द्रविड़ मंदिर

विभिन्न रूपोंऔरविशेषताओं के साथमंदिर की एक और शैलीदक्षिणमें देखीजासकतीहैऔर इसे द्रविड़ शैली के रूपमेंजानाजाताहै। यहाँ पर छह या आठभुजाओं का सीढ़ीनुमाविमानहैजिसके शीर्षपर एक गोलस्तूप (अच्छी तरह से निर्मितशिलाखंड) है।

17.6.1 पल्लवमंदिर

भव्य मंदिरों के निर्माणमेंपल्लवों का शासनकाल (७वीं–९वीं शताब्दी सीई) उत्कृष्ट मानाजाताहै।उनकाबंदरगाह शहरमामल्लापुरम या महाबलीपुरमसंरचनात्मकगतिविधियों का केंद्रथा। ये गतिविधियाँ शासकनरसिंहवरम द्वितीय राजसिम्हा के कालमें शुरू हुईं जिन्होंने कम से कम पाँचमंदिरों का निर्माणकिया।पहले की अवधिमेंकठोरआग्नेय चट्टानों का उपयोगमंदिर के निर्माण के लिए कियाजाताथाजैसेओलक्कनेश्वरमंदिर के लिए ग्रेनाइट, शोरमंदिर के लिए ग्रेनाइटऔरतालागिरीश्वरऔरमुकुंदुनयनारमंदिरों के लिए गनीस।बादमेंनरमबलुआपत्थरभीप्रयोगमेंआया।राजसिंह शैली के मंदिरों की विशिष्टविशेषतागर्जनावालेसिंहों के साथस्तंभऔरस्तंभहैं।

ममल्लापुरममें शोरमंदिर की चर्चाकरतेहुए, इसमेंशिवऔरविष्णुकोसमर्पितमंदिरपरिसर के भीतरतीनसंरचनाएं या मंदिरहैं।पहलेमंदिरकोराजसिंहेश्वरकहाजाताहै, शिवकोसमर्पित एक तीनमंजिलाविमानप्रकार का मंदिर, एक वर्ग योजनाहै, लेकिनग्रीवाऔरशिखरआठपक्षीय हैंजोइसकीद्रविड़ वास्तुकलाकोदर्शाताहै। खंभोंऔरस्तम्भोंमेंदहाड़तेहुए सिंहहैं।दूसरामंदिरशिवकोसमर्पित क्षत्रियसिंहेश्वरकहलाताहै।इसमें एक चौकोर योजना के साथचारमंजिलाविमानहैऔर एक पॉलिशबेसाल्टफिनियल द्वाराअष्टकोणीय ग्रीवाऔरशिखरहै।हारा के अलंकरण के रूपमें, दूसरेऔरतीसरेतालमेंकूटऔरसालहोतेहैं।तीसरामंदिरविष्णुकोसमर्पितनरपतिसिम्हापल्लवविष्णुग्रह के नाम से जानाजाताहै। यह एक मंडपमंदिरहै, एक मंजिलाहॉलप्रकार की संरचनाहैऔरशिव के दोमंदिरों के बीचस्थितहै।पल्लवकाल के अन्य प्रसिद्ध मंदिरकैलासनाथमंदिरऔरवैकुंठपेरुमलमंदिरहैं।कैलाशनाथमंदिरकांचीपुरममेंस्थितहैऔरभगवानशिवकोसमर्पितहै। यह बलुआपत्थर की चिनाई से बनायागयाहैऔरइसमेंअष्टकोणीय ग्रीवाऔरशिखर के साथचौकोर योजनामेंचारमंजिलाविमानहै।मंदिरमेंपरिक्रमापथहैऔरपूरामंदिरपरिसर एक बाहरीदीवार से घिराहुआहैजिसेप्राकारकहाजाताहै।वैकुंठपेरुमलमंदिरभीकांचीपुरममेंस्थितहैऔरभगवानविष्णुकोसमर्पितहै।मंदिरबलुआपत्थर से बनायागयाहैऔरढालेहुए आदिस्थानपर खड़ाहै।मंदिरमेंअष्टकोणीय ग्रीवा के साथवर्गाकार योजनामेंविमानहैऔर एक ढके हुए परिक्रमापथ के साथशिखरहै।वैकुंठपेरुमलमंदिरकोपल्लवों का अंतिमवास्तुशिल्पचमत्कारमानाजाताहै।

17.6.2 चोलमंदिर

चोलों (5वीं–13वीं शताब्दी) का साम्राज्य पूरेतमिलनाडुऔरआंध्र, कर्नाटकऔरकेरल के परिधीय क्षेत्रोंमेंथा।चोलमंदिरोंमेंपल्लवऔरचालुक्य स्थापत्य परंपराओं के कुछसमानतत्वहैं।चोलमंदिरोंकोतीनचरणोंमेंमानाजाताहै।पहलेचरण या प्रारंभिकचोलचरणमेंमंदिरहैं; सुंदरेश्वर, विजयालय, कोलेश्वरमऔरकोरंगनाथ।प्रारंभिकचोलमंदिरोंमेंवर्गाकारविमानहैजिसकेसामनेअर्धमंडपहै।मुख्य मंदिरआठउप–मंदिरों से घिराहुआहैजिन्हेंअष्ट–परिवार्य या आठपारिवारिकमंदिरों के रूपमेंजानाजाताहै।दूसरेचरणमें शासकराजराजाप्रथमऔर उनके पुत्र राजेंद्रप्रथम के अधीनवास्तुकलाअपनेचरमपरपहुंचगई।मंदिरोंको समृद्ध मूर्तिकलाअलंकरणों से

सजायागयाथा।बृहदीश्वरमंदिरतंजावुरमेंइनमंदिरोंमें से एक हैजोभगवानशिवकोसमर्पितहैऔरबड़ेग्रेनाइटपत्थरों से निर्मितहै।इसमेंसोलहमंजिलों के माध्यम से 66 मीटर का सबसे लंबा विमानहैऔरप्रत्येकमंजिलामेंहरतत्वहैं।विमानकोस्तूप या फिनियल के साथ एक विशाल अखंड"कपोला" द्वाराताजपहनायाजाताहै।मूल–प्रसादमेंसीढ़ियों या सोपान की उड़ानों के साथ एक अंतरा या वेस्टिबुलहोताहै।इसकेअग्रभागमेंमहामंडपऔरपृथकनंदी–मंडपहैजोबादमेंजोड़ागयाहै।मंदिरमेंदोमंजिलापरिक्रमापथहैं।

चोलमंदिरों के तीसरेचरणमें, योजनाऔरअधिकजटिलहोगईथी।गोपुरम के अलावामंदिरपरिसर के भीतरअतिरिक्तस्तंभोंवालेमंडपबनाए गए थे।उनमें से कुछहाथियोंऔर घोड़ों द्वारा खींचे गए रथ या पहिएदाररथ के आकारमेंहैं। इस अवधिमेंसूर्य की पूजास्पष्टहैक्योंकितिरुमंगलक्कुडीमेंमंदिरसूर्यनारचोलों की अवधि के लिए (1075–1120) दिनांकितहोसकताहै।मंदिरपत्थरोंऔरईंटों से बनाहै।दारासुरममें ऐरावतेश्वरमंदिरको"मूर्तिकारों का सपनाफिर से पत्थरमेंरहने" के रूपमेंकहागयाहै। यहांसामनेमंडप घोड़ों द्वारा खींचे गए विशालरथ के रूपमेंहै।मंदिरमेंसुंदरपेंटिंग, मूर्तियांऔरराहतपैनलहैं। इस मंदिर की सबसेअनूठीकलामंदिर के ठीकसामनेसंगीतमय पत्थर के स्तंभहैं।वेटकरानेपरअलग–अलगपत्थरबनातेहैंऔरहर समय लोगोंकोआकर्षितकरतेहैं।

17.6.3 चालुक्य मंदिर

प्रारंभिकपश्चिमीचालुक्यों (ई.पू. 535–757) ने पूरेकर्नाटक, आंध्रप्रदेशऔरमहाराष्ट्र पर शासनकिया।उन्होंनेअपनीराजधानियोंमें एहोल, बादामी, पट्टाडकल, बागलकोट, आलमपुर, कुदावेली, पनयम, महानंदी, सत्यवोलुऔरकदमारकलावामेंमंदिरों का निर्माणलैटिना रूपमेंमंदिरअधिरचना के साथकिया। इस काल के मंदिर न तोसच्चेनागरथेऔर न हीसच्चेद्रविड़, न हीसच्चेवेसर। ऐहोलमें, हिंदूवास्तुकला की मूलअवधारणा का पालनकियागयाथा।गर्भगृहकोस्तंभितमंडप द्वारासामने रखा गयाथा, बादमेंगर्भगृहकोमूलप्रसाद के रूपमेंविकसितकियागयाथा।मूल–प्रसादमेंअंतला, बंद सभा–मंडपऔरमुख–मंडपकोजोड़ागया।शिखरमेंमौलिकताऔरलालित्य का अभावहै।इनमंदिरोंमेंपरिक्रमापथहै। ऐहोल के कुछ शुरुआतीमंदिरोंमेंकोंटी–गुड़ीसमूह के मंदिरऔरलाध–खानमंदिरहैं।बादामीमेंमंदिरस्थापत्य की द्रविड़ शैलीपाईजातीहै। उनके

विमानमेंविशिष्टद्रविड़ विशेषताएंहैंऔरमालेगिट्टीशिवालय मंदिरमेंअष्टकोणीय शिखरको एक भारीगुंबद द्वाराताजपहनायाजाताहै।बादामी के मंदिरोंमेंहारातत्वों के साथअष्टकोणीय ग्रीवाऔरशिखरहैंजोविशिष्टद्रविड़ शैली के हैं।चालुक्य मंदिरोंमें से कुछपापनाथ, विरुपाक्ष, मलिकार्जुनऔरनवब्रह्मामंदिरहैं।

प्रारंभिकचालुक्यों के विपरीत, बाद के चालुक्य अपनेमंदिरों के लिए बलुआपत्थर की तुलनामेंमहीनदानेदारगहरेसंगमरमरजैसेचिकनेऔरसाबुनवालेक्लोरिटिकविद्वानपरअधिकनिर्भरथे। उन्होंनेतहखानेऔरशिखर के चारोंओरअलंकरण के साथबहुमंजिलाविमान की परंपराकोजारी रखा। इस युग के मंदिरआमतौरपरगर्भगृह के चारोंओर एक परिक्रमापथ के बिनातिरछेहोतेहैं, लेकिनमंदिर की दीवारों से परेविस्तृतअधिष्ठानपूरेमंदिरपरिसर के चारोंओरपरिक्रमा के लिए एक मार्गप्रदानकरताहै।अक्सरमुख्य प्रवेश द्वारमहामंडप के किनारों से जुड़ाहोताथा न किमुख–मंडपसे।बाद के चालुक्य मंदिरोंमें से कुछहैं, लक्कुंडीमेंजैनमंदिर, कुक्कनूरमेंकल्लेश्वरमंदिर, लक्कुंडीमेंकासिवेश्वरमंदिरऔरकुरुवट्टीमेंमलिकार्जुनमंदिर।बाद के चालुक्यों ने उत्तरऔरदक्षिण की नईकलाओंऔरतत्वोंको शामिलऔरसंशोधितकरकेऔरमौजूदावास्तुशिल्पपरंपराओंमेंस्वदेशी शैलियोंकोअपनाकरदक्कनवास्तुकला के संलयन रूपकोअधिकमहत्वदियागयाहै।

17.6.4 विजय नगरमंदिर

विजय नगरसाम्राज्य (ई.पू.1336–1565) कलाऔरवास्तुकला का महानकेंद्रथा।इसकीराजधानीविजयनगरथी, आधुनिकदिनहम्पी। इस राजवंश के राजाओं ने ग्रेनाइटजैसेकठोरपत्थरोंमेंबड़ेचमत्कारकिए औरउन्होंनेपहले से मौजूदमंदिरोंकोभीजोड़ा।हम्पीमेंविरुपाक्ष, हजारारामऔरविट्ठलस्वामी के मंदिरविजयनगरकलाऔरवास्तुकला के सर्वोत्तमउदाहरणोंमें से हैं।इन शासकों ने पल्लवों, चोलऔरपांड्यों के द्रविड़ आदेश से कलाऔरवास्तुकला के विभिन्नतत्वोंकोजोड़ा, इसीतरहचालुक्य–होयसलपरंपराओं के वेसरआदेशऔरदक्कन की इंडो–इस्लामिक शैलीकोअपनायागयाथा।

उनके मंदिरपरिसरोंमेंआयताकारप्राकरों की समानांतरश्रृंखला या प्रत्येकपक्ष के केंद्रमेंगोपुरम के साथपार्श्वदीवारें शामिलथीं।विजयनगर के शासकों ने

लंबेऔरविशालगोपुरमबनवाए, जिन्हेंरायगोपुरम के नाम से जानाजाताहै।वेआमतौरपरसात से ग्यारहमंजिलाहोतेथे।मंदिरोंमेंविभिन्नअनुष्ठानोंऔरसांस्कृतिककार्यक्रमों के लिए बड़ी संख्या मेंस्तंभोंवालेमंडपथे।विजयनगर के मंदिरों के निर्माणमेंगारे का अभावहै।मंदिर की सबसेआकर्षकविशेषता उस समय का कल्याणमंडपथा।तथाकथित"हजारस्तंभोंवालामंडप", स्तंभों की बहुतअधिकपंक्तियोंवाला एक विशालहॉल।विजयनगर के स्तंभोंकोसिंहऔरहाथियों की सूंड, पौराणिकजानवरों, फूलोंऔरजीव–जंतुओं के डिजाइनों के साथबहुतबारीकी से उकेरागयाहै।दक्षिणभारतमेंपहलीबार, इस अवधि के दौरानदेवीगंगाऔर यमुनाको उनके वाहनों या वाहनों के साथगोपुरम के प्रवेश द्वारपरदर्शायागयाथा।

17.7 वेसरमंदिर

मंदिरों की वेसर शैलीनागरऔरद्रविड़ दोनों का संयोजनहै, इसकीअधिरचना घंटी के आकार की है।

17.7.1 होयसलकाल के मंदिर

होयसला के शाही घराने का शासनविशेष रूप से मंदिरकलाऔरवास्तुकला के क्षेत्र मेंअद्वितीय उपलब्धियों के लिए जानाजाताहै।बेलूर के सभीमंदिरोंमेंसबसेअधिकमान्यताप्राप्तसेन्नाकेशवमंदिरहै, जिसेसीई 1117 मेंहोयसलाराजाविष्णुवर्धन द्वाराबनायागयाथा।हेलबिडमेंहोयसालेश्वरमंदिरभारत के अन्य समकालीनमंदिरों की तुलनामें एक अलग योजनाऔरऊंचाई के साथ एक तारे के आकार का मंदिरहै, जोआमतौरपरवर्गाकारथे।और योजनामेंआयताकार।आमतौरपर, ये मंदिर एक सामान्य गर्भ–गृह के साथ एक बाड़ेमें खड़ेहोतेहैं, जिसकेसामने एक अंतरालऔर एक स्तंभितमंडपहोताहैजिसेनवरंग/गुड़ा–मंडप के नाम से जानाजाताहै।कुछमंदिरोंमेंमुख–मंडप या सभा–मंडपभीहोतेहैं।नवरंगकोविशेष रूप से इसकी"लालटेनछत" के लिए जानाजाताहैक्योंकि उनके पासवर्ग के कोनेमेंतिरछे रखेपत्थर के बीम के माध्यम से गहरेनिचे या गुंबदहैं।अमृतेश्वरमंदिर के नवरंगमेंनक्काशी के साथअड़तालीसगुंबदहैं।

होयसलमंदिरोंमेंबहुमंदिर या एक से अधिकमूल–प्रसादहैं, इस प्रकार एक मंदिरपरिसरमेंइसकी संख्या के अनुसारमंदिरोंको एककुटा (एकल), द्विकुटा (डबल), त्रिकुटा (ट्रिपल), कटुस्कुता (चौगुनी) औरपंचकूट के रूपमेंवर्गीकृत कियाजाताहै। पंचक)।

होयसलशिखर शैलीमेंवेसरहै, यानी घंटी के आकार का, अष्ट–भद्र या प्रारंभ–आकार की योजना के साथमिश्रित।मुख्य शिखरपर एक हजारपंखुड़ियोंवालेकमलजैसेसदस्य का ताजपहनायाजाताहै, जो एक खपुरी (खोपड़ी) से ढका होताहै।इसकेऊपर एक सुंदरपानी के बर्तन के आकारमेंकलसा का अंतिमभागटिकाहुआहै।अधिष्ठान से प्रक्षेपितचौड़ीजगती एक परिक्रमापथ के रूपमेंकार्यकरतीहै।

17.7.2 दिलवाड़ाजैनमंदिर

माउंटआबूमेंदिलवाड़ा के जैनमंदिरपरिसरमेंसोलंकीवास्तुकला का कुछप्रभावथाऔर इसे मंदिरवास्तुकला की वेसर शैली की श्रेणी मेंमानाजाताहै।विशेष रूप से विमला–वसाहीऔरलूना–वसाही क्षेत्रीय कलापरंपराओं के सम्मिश्रणकोदर्शातेहैं। उनके पासआश्चर्यजनकमूर्तिकलासजावटहैजो एक मजबूतमध्य भारतीय प्रभावकोदर्शातीहै।

ये मंदिरज्यादातरसफेदसंगमरमर से बनेथे। उनके पासअभूतपूर्वतोरण, कमल के रूपांकनों के साथनक्काशीदार छत, महिलाब्रैकेट के आंकड़े, औरदेव–कुलिकों के साथ खुलेपिछवाड़ेभीहैं, यानीदेवी–देवताओं की छवियां।ब्राह्मणवादीऔरजैनमंदिरों की योजनालगभग एक हीहै।विमल–वसाहीमंदिरआदिनाथकोसमर्पितहै, यह मूल–प्रसाद, गुढ़ा–मंडप (बंद हॉल), सभा–मंडप (विधानसभा हॉल) औरदेव–कुलिका (सहायक मंदिर) के साथपूर्व की ओरहै।इसकेप्रवेश द्वार के बरामदेमें एक झूठागुंबदहै।मंदिरलूना–वसाहीविमलावसाहीमंदिर के समानस्थापत्य औरकलात्मकतत्वोंकोसाझा करताहै।

अपनीप्रगति की जांचकरे–2

1. द्रविड़ शैली के मंदिरकहाँ पाए जातेहैं?

2. द्रविड़ शैली के मंदिरों की स्थापत्य विशेषताओं का संक्षेपमेंवर्णनकीजिए।

3. वेसर शैली के मंदिरों की पहचानकैसे की जासकतीहै?

17.8 सारांश

देवताओंऔरमनुष्यों की कुछअवधारणाओं ने मंदिरको एक स्थापत्य निकाय के रूपमेंउभाराहै।जबपरंपराओंऔरपूजा के प्रतीकों (पूजा की वस्तुओं) को एक साथजोड़

दियाजाताहै, जिसनेभगवान के घर की अवधारणाकोजन्मदियाजिसमेंमंदिर की उत्पत्तिनिहितहै। ऐसालगताहै कि यह घटनाभारतमेंकेवल 700 ईसापूर्व के बादमहाजनपदकाल की शुरुआतमेंविकसितहुईथी।आलय, देवालय, प्रसाद, देवप्रसाद, बड़ी, कालीबाड़ी, मंदिराआदि शब्दों का अर्थ एकऔर एकही"घर"होताहै।

भारतमेंमंदिरों की अलग–अलग शैलियाँ और रूपभीमौजूदहैंजैसेनागर शैली, द्रविड़ शैलीऔरवेसर शैली।नागर शैली के मंदिरउत्तरभारतीय मंदिरहैंजिनमें घुमावदारशिखरहैं।वेप्रमुख रूप से गुप्त, चंदेलों, ओडिशा के मंदिरों, राजस्थानऔरगुजरात के मंदिरोंऔरराजपूतकाल के मंदिरों द्वारानिर्मितमंदिरों के रूपमेंपहचानेजातेहैं।पल्लव, चोल, चालुक्य राजवंशों द्वारानिर्मितमंदिरऔरविजय नगर के मंदिरद्रविड़ शैली के हैं।दिलवाड़ा, बेलूर, हलेबिडआदिमेंवेसर शैली के मंदिरदर्शनीय हैं।

17.9 शब्दावली

मंदिरः एकपवित्र स्थानहोताहैजहांलोगप्रार्थनाकरतेहैंऔरआध्यात्मिक/धार्मिकअनुष्ठानकरतेहैं।

नागर शैली के मंदिरःउत्तरभारतीय यानागर शैली के मंदिर की वास्तुकलामें घुमावदारमीनार की सबसेमहत्वपूर्णविशेषताहैक्योंकिइसकीअधिरचनाकोशिखर के रूपमेंभीजानाजाताहै, जोचार–तरफा, चौकोर या इसके शीर्षपर एक नुकीलेसिरे के साथआयताकारहै।

द्रविड़ शैली के मंदिरःविभिन्न रूपोंऔरविशेषताओं के साथमंदिर की एक और शैलीदक्षिणमें देखीजातीहैऔर इसे द्रविड़ शैली के रूपमेंजानाजाताहै। यहाँ पर छह या आठभुजाओं का सीढ़ीनुमा विमान है जिसके शीर्ष पर एक गोलस्तूप (अच्छी तरह से निर्मितशिलाखंड) है।

वेसर शैली के मंदिरः मंदिरों की वेसर शैलीनागरऔरद्रविड़ दोनों का संयोजनहै, इसकीअधिरचना घंटी के आकार की है।

17.10 अपनीप्रगति की जांचकरे के उत्तर

अपनी प्रगति की जांच करे–3

1. 17.2 भाग देखें

2. 17.5 भाग देखें

3. 17.5.2.3 उप–भाग देखें

अपनीप्रगति की जांचकरे 4

1 17.6उप–भाग देखें।

2. 17.6.1 से लेकर 17.6.4 उप अनुभाग तक देखें।

3. 17.7 भाग देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY